दृष्टि
The Vision

भूगोल (वैकल्पिक विषय)

(जलवायु विज्ञान, पर्यावरण भूगोल, प्रादेशिक आयोजना, आर्थिक भूगोल, जनसंख्या एवं बस्ती भूगोल)

8 Test

निर्धारित समय: तीन घंटे
Time allowed: Three Hours

अधिकतम अंक: 250
Maximum Marks: 250

DTVF/19 (J-S)–M–G2

Name: सुनिल कुमार धनवन्ता

Mobile Number: ____________

Medium (English/Hindi): हिन्दी

Reg. Number: * * *

Center & Date: 06/07/2019

UPSC Roll No. *(If allotted)*: ____________

प्रश्न-पत्र के लिये विशिष्ट अनुदेश

कृपया प्रश्नों के उत्तर देने से पूर्व निम्नलिखित प्रत्येक अनुदेश को ध्यानपूर्वक पढ़ें:
इसमें **आठ** प्रश्न हैं जो दो खण्डों में विभाजित है तथा **हिन्दी एवं अंग्रेज़ी** भाषा में मुद्रित हैं।
परीक्षार्थी को कुल पाँच प्रश्नों के उत्तर देने हैं।
प्रश्न संख्या 1 और 5 **अनिवार्य** हैं तथा बाकी में से **प्रत्येक खण्ड से कम-से-कम एक प्रश्न** चुनकर किन्हीं **तीन प्रश्नों** के **उत्तर** दीजिये।
प्रत्येक प्रश्न/भाग के अंक उसके सामने दिये गए हैं।
प्रश्नों के उत्तर उसी माध्यम में लिखे जाने चाहियें जिसका उल्लेख आपके प्रवेश-पत्र में किया गया है, और इस माध्यम का स्पष्ट उल्लेख प्रश्न-सह-उत्तर (क्यू.सी.ए.) पुस्तिका के मुख-पृष्ठ पर अंकित निर्दिष्ट स्थान पर किया जाना चाहिये। उल्लिखित माध्यम के अतिरिक्त अन्य किसी माध्यम में लिखे गए उत्तर पर **कोई अंक नहीं** मिलेंगे।
प्रश्नों में शब्द सीमा, जहाँ विनिर्दिष्ट है, का अनुसरण किया जाना चाहिये।
जहाँ आवश्यक हो, अपने उत्तर को उपयुक्त चित्रों/मानचित्रों तथा आरेखों द्वारा दर्शाएँ। इन्हें प्रश्न का उत्तर देने के लिये दिये गए स्थान में ही बनाना है।
प्रश्नों के उत्तरों की गणना क्रमानुसार की जाएगी। यदि काटा नहीं हो, तो प्रश्न के उत्तर की गणना की जाएगी चाहे वह उत्तर अंशतः दिया गया हो। प्रश्न-सह-उत्तर पुस्तिका में खाली छोड़ा हुआ पृष्ठ या उसके अंश को स्पष्ट रूप से काटा जाना चाहिये।

QUESTION PAPER SPECIFIC INSTRUCTIONS

Please read each of the following instruction carefully before attempting questions:
*There are **EIGHT** questions divided in **TWO SECTIONS** and printed both in **HINDI & ENGLISH**.*
*Candidate has to attempt **FIVE** questions in all.*
*Questions no. 1 and 5 are compulsory and out of the remaining, any **THREE** are to be attempted choosing at least **ONE** from each section.*
The number of marks carried by a question/part is indicated against it.
Answers must be written in the medium authorized in the Admission Certificate which must be stated clearly on the cover of this Question-cum-Answer (Q.C.A.) Booklet in the space provided. No marks will be given for answers written in a medium other than the authorized one.
Word limit in questions, wherever specified, should be adhered to.
Illustrate your answers with suitable sketches/maps and diagrams, wherever considered necessary. These shall be drawn in the space provided for answering the question itself.
Attempts of questions shall be counted in sequential order. Unless struck off, attempt of a question shall be counted even if attempted partly. Any page or portion of the page left blank in the Question-cum-Answer Booklet must be clearly struck off.

प्र. सं. (Q.No.)	a	b	c	d	e	कुल अंक (Total Marks)	प्र. सं. (Q.No.)	a	b	c	d	e	कुल अंक (Total Marks)
1							5						
2							6						
3							7						
4							8						
						सकल योग (Grand Total)							

मूल्यांकनकर्त्ता (हस्ताक्षर)
Evaluator (Signature)

पुनरीक्षणकर्त्ता (हस्ताक्षर)
Reviewer (Signature)

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

खण्ड - क/ SECTION - A

1. निम्नलिखित में से प्रत्येक का लगभग 150 शब्दों में उत्तर दीजिये: $10 \times 5 = 50$

Answer the following in about 150 words each:

(a) पर्यावरणीय शिक्षा के महत्त्व को बताइये साथ ही भारत में पर्यावरणीय शिक्षा पर संक्षिप्त चर्चा कीजिये।

Explain the importance of environmental education and briefly discuss its status in India.

पर्यावरण के घटकों व उनकी कार्यशीलता तथा उसके अनुप्रयोगों की जानकारी प्राप्त करना पर्यावरणीय शिक्षा कहलाता है।

पर्यावरणीय शिक्षा के महत्व -

→ पर्यावरणीय घटकों के बारे में जानकारी से लोगों में जागरूकता का प्रसार होता है।

→ पर्यावरणीय संरक्षण हेतु पहले पर्यावरण की जानकारी होना आवश्यक होता है।

→ पर्यावरणीय कार्यशीलता (functionality) की जानकारी प्राप्त कर उसका प्रयोग मानव की भलाई में किया जा सकता है जैसे मानसून का पूर्वानुमान करना, आपदा प्रबन्धन इत्यादि।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

भारत में पर्यावरणीय शिक्षा

↳ 1948 से पर्यावरणीय शिक्षा प्रारंभ।

↳ संविधान के 'DPSP' एवं मूल कर्तव्यों में पर्यावरण संरक्षण का समावेशन।

↳ सभी विद्यालयों एवं विश्वविद्यालयी पाठ्यक्रम में पर्यावरण शिक्षा का समावेशन,

↳ अनेक विश्वविद्यालयों में पर्यावरणीय शिक्षा शोध का विषय हो

↳ पर्यावरणीय शिक्षा संस्थान की स्थापना

↳ CEE (center for environmental Education) की स्थापना

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(b) उष्णकटिबंधीय घास के मैदानों का वितरण एवं इनके पर्यावरणीय व आर्थिक महत्त्व को बताइये।

Elucidate the distribution of tropical grassland and their environmental and economic significance.

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

उष्णकटिबंधीय घास के मैदान मुख्य रूप से 30° से 45° अक्षांशों के मध्य दोनों गोलार्द्धों में विस्तृत हैं।

इन मैदानों घास की ऊंचाई 3-6 मी होती है तथा ~~बिखरी~~ बीच-बीच में वृक्ष भी पाए जाते हैं।

वितरण

(i) सूडान में इस प्रकार के मैदानों को सवाना कहा जाता है।

(ii) ब्राजील का लानोस

(iii) आस्ट्रेलिया

इन मैदानों में मध्यम प्रकार की वर्षा होती है यहाँ की घास पशुओं के लिए काफी पौष्टिक होती है जिसकी वजह

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

से इन क्षेत्रों में पशुपालन का व्यवसाय देखने को मिलता है जिससे अनेक समुदायों की आजीविका का निर्वहन होता है

ये घास के मैदान अनेक प्रकार के जीव-जंतुओं के आश्रय स्थल होते हैं, जो पारिस्थितिकीय संतुलन में तथा जैव विविधता के लिए उपयोगी है।

~~साथी~~ साथ ही ये मैदान कार्बन सिंक का भी कार्य करते हैं तथा ग्लोबल वार्मिंग को कम करने में सहयोगी होते हैं।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(c) वृद्धि ध्रुव एवं वृद्धि केंद्र में अंतर को स्पष्ट कीजिये।

Differentiate between Growth pole and Growth Centre.

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

वृद्धि ध्रुव की अवधारणा फ्रांसिस पैरोक्स जबकि वृद्धि केन्द्र की अवधारणा अमेरिकी भूगोलवेत्ता बोडविले द्वारा दी गई थी।

वृद्धि ध्रुव एवं वृद्धि केन्द्र में अंतर

वृद्धि ध्रुव	वृद्धि केन्द्र
(i) यह केन्द्रीयकरण का सूचक हो	(i) यह विकेन्द्रीकरण का सूचक है।
(ii) यह मुख्य रूप से वो कार्य किए जाते हैं जो बाकी क्षेत्र में नहीं किए जाते।	(ii) यहां कार्यों की प्रकृति ऐसी नहीं होती
(iii) इन स्वरूप राष्ट्रीय होता है।	(iii) इनका स्वरूप प्रादेशिक होता है।
(iv) यहां मुख्यत: तृतीयक कार्य होते हैं।	(v) यहां मुख्यत: द्वितीयक कार्य होते हैं

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(v) इसमें प्रादेशिक असंतुलन में वृद्धि हो सकती है।

(vi) इसकी जनसंख्या घनी होती है।

(vii) Ex. दिल्ली

(v) यह प्रादेशिक संतुलन के लिए उपयोगी होता है।

(vi) जनघनत्व अपेक्षाकृत कम होता है।

(vii) Ex. गुड़गांव, फरीदाबाद इत्यादि

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(d) कृषि में संपोषणीय विकास दुर्भिक्ष से बचाव का सबसे प्रभावी उपाय है। विवेचन कीजिये।

Sustainable development in agriculture is the most effective way to protect against famine. Discuss.

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

जब लंबे समय तक खाद्यान्न की कमी के कारण सामूहिक रूप से अनेक लोगों की मृत्यु होती है तो उसे ~~दुर्भि~~ दुर्भिक्ष कहा जाता है।

दुर्भिक्ष के लिए मुख्य रूप से उत्तरदायी फसल के नष्ट होने को माना जाता है। अतः इसके लिए संपोषणीय विकास एक प्रभावी उपाय हो सकता है।

इसके तहत कृषि के संपोषणीय विकास के लिए निम्नलिखित कदम उठाएं जा सकते हैं —

→ सूखा प्रतिरोधी फसलों का विकास करना ताकि वर्षा की विफलता से फसल खराब न हो तथा दुर्भिक्ष का सामना

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

न करना पड़े।

(ii) रासायनिक उर्वरकों व कीटनाशकों का ~~क~~ प्रयोग अत्यन्त करना क्योंकि इनके ज्यादा प्रयोग से कीटों में प्रतिरोधकता का विकास हो सकता है।

(iii) जैविक कृषि एवं ब जीरो बजट नेचुरल फार्मिंग को बढ़ावा देना।

(iv) मोटे अनाज की खेती को बढ़ावा देना।

संपोषणीय कृषि के कारण उत्पादन में वृद्धि होगी तथा विकट परिस्थितियों में भी फसल के नष्ट न होने के कारण खदुर्भिक्ष का सामना नहीं करना पड़ेगा।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(e) सतत् पोषणीय विकास जैवविविधता को समृद्ध बनाकर मानव के जीवन स्तर को ऊँचा करता है। विवेचन कीजिये।

Sustainable development enhances the quality of life of the human by enriching biodiversity. Discuss.

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

भविष्य की पीढ़ी की विकास आवश्यकताओं के साथ कोई समझौता किए बिना वर्तमान पीढ़ी की आवश्यकताओं को पूरा करना संपोषणीय विकास कहलाता है। यह अवधारणा सर्वप्रथम ब्रंटलैण्ड रिपोर्ट में सामने आई थी।

सतत पोषणीय विकास व जैव विविधता

↳ वनों के कम कटाव के कारण जीव जंतुओं के आवास का विखण्डन कम होगा जिससे जैव विविधता सहज होगी।

↳ कीटनाशकों (रासायनिक) एवं रासायनिक उर्वरकों के कम या शून्य प्रयोग से अनेक कीटों के विनाश में कमी तथा उन पर आश्रित अनेक जीवों की आबादी में वृद्धि।∞

↳ ऊर्जा का कम उपभोग → GHG कम उत्सर्जन → ग्लोबल वार्मिंग कम

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

संपोषणीय विकास का
मानव के जीवन स्तर पर प्रभाव

→ गरीब लोगों की आय में वृद्धि होती है क्योंकि जलवायु परिवर्तन से सर्वाधिक नुकसान इनको ही होता है

→ सतत कृषि के कारण मानव स्वास्थ्य में सकारात्मक सुधार व उत्पादन में वृद्धि

→ प्रदूषण कम → मानव जीवन गुणवत्ता ↑

इसलिए हमें जल्द से जल्द सतत विकास लक्ष्यों के क्रियान्वयन को सुनिश्चित करना चाहिए।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

2. (a) विश्व के प्रमुख ताप कटिबंधों की चर्चा कीजिये तथा इनका स्थानीय समाजिक-आर्थिक गतिविधियों पर पड़ने वाले प्रभावों को बताइये। 20

Discuss the major temperate zones across the globe and highlight their impacts upon local socio-economic activities. 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

पृथ्वी की सतह पर तापमान के असमान वितरण को देखते हुए पृथ्वी को भूगोलवेत्ताओं द्वारा विभिन्न तापकटिबंधों में बाँटा जाता है।

आधुनिक वर्गीकरण के अनुसार प्रमुख ताप कटिबंध-

(1) उष्ण कटिबंध - इस कटिबंध का विस्तार सामान्यतः 10° N से 10° S अक्षांशों के मध्य पाया जाता है।

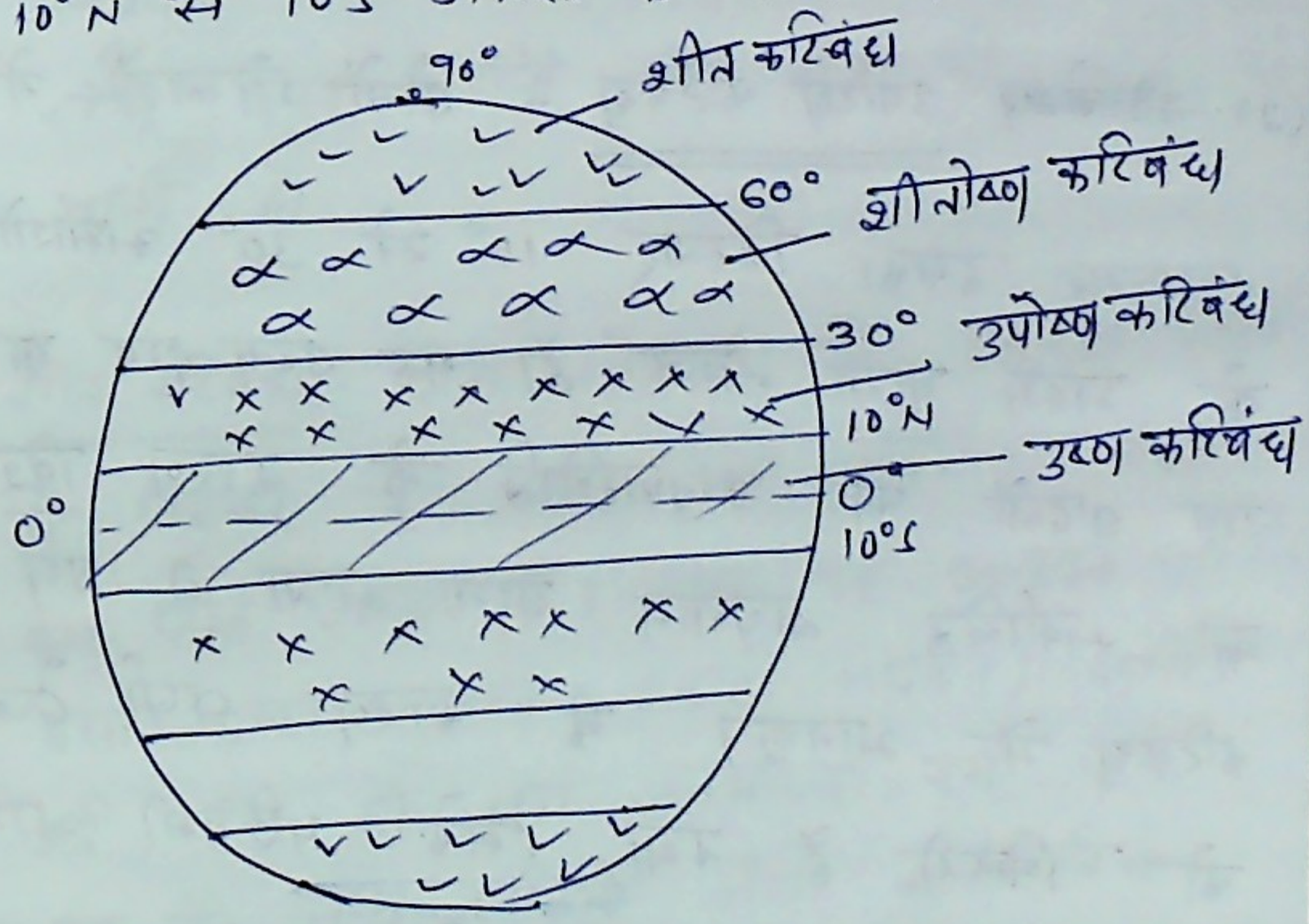

चित्र: पृथ्वी पर ताप कटिबंध

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

उष्ण कटिबंध में वर्ष भर उच्च तापमान बना रहता है तथा वाष्पीकरण के ज्यादा होने पर सालभर वर्षा भी होती रहती हैं यह सदाबहार प्रकार के वृक्ष पाये जाते हैं। यहां पर जनसंख्या का घनत्व सामान्यतः कम पाया जाता है क्योंकि यहां अधिक आर्द्रता के कारण बीमारियां ज्यादा पाई जाती हैं यहां पर विश्व की अनेक जनजातियां पाई जाती हैं जो वनोत्पाद के जरिये अपना जीवन व्यतीत करती हैं।

(2) ~~शीतोष्ण~~ उपोष्ण कटिबंध - दोनों गोलार्द्धों में सामान्यतः इसका विस्तार 10° से 30° अक्षांशों के मध्य पाया जाता है। यह उच्च दाब का तथा बादलों की अनुपस्थिति के कारण विश्व का सर्वाधिक तापमान पाया जाता है। इस कटिबंध में मानसून के कारण वर्षा देखने को मिलती है तथा इसके पश्चिमी भाग में मरुस्थल भी देखने को मिलते हैं तथा

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

मरुस्थलों में जनसंख्या का निवास कम पाया जाता है तथा मानसूनी इलाकों में चावल, गेहूं इत्यादि की कृषि के साथ-साथ उच्च जनघनत्व भी देखने को मिलती है।

(3) शीतोष्ण कटिबंध - दोनों गोलार्द्धों में इसका विस्तार 30° से 60° अक्षांशों के मध्य पाया जाता है कम तापमान के साथ-साथ यहां शंकुधारी वृक्ष भी पाए जाते हैं। यहां पर मध्यम जनघनत्व पाया जाता है यहां पाए जाने वाले स्टेपी घास मैदानों में गेहूं की कृषि की जाती है।

(4) शीत कटिबंध - दोनों गोलार्द्धों में 60°-90° अक्षांशों में विस्तार के साथ यहां तापमान बहुत कम पाया जाता है। यहां पर अल्पाइन वनस्पति तथा टुण्ड्रा वनस्पति (काई, लाइकेन) इत्यादि पाई जाती है। यहां जनघनत्व कम पाया जाता है परन्तु एस्किमो जैसी जनजातियां बर्फ के घर (इग्लू) का निर्माण कर निवास करती है।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(b) कोपेन द्वारा प्रस्तुत जलवायु वर्गीकरण का आलोचनात्मक मूल्यांकन कीजिये। 15

Critically evaluate the classification of climate given by Koppen. 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

कोपेन ने पृथ्वी पर जलवायु विविधताओं का अवलोकन कर उनका वर्गीकरण करने का प्रयास किया। कोपेन ने अपने वर्गीकरण के लिए तापमान, वर्षा को मुख्य आधार बनाया।

कोपेन ने वनस्पति विज्ञानी कैण्डाल से प्रभावित होकर संपूर्ण विश्व को 5 कटिबंधों में विभाजित कर उन्हें अंग्रेजी वर्णमाला के बड़े अक्षरों से दर्शाया.

जलवायु प्रकार	वनस्पति प्रकार
उष्ण कटिबंधीय (A)	मेगाथर्म
शुष्क जलवायु (B)	—
उपोष्ण कटिबंधीय (C)	मीसोथर्म
शीतोष्ण कटिबंधीय (D)	माइक्रोथर्म
शीत कटिबंधीय (E)	हेकिस्टोथर्म)

वर्षा की मात्रा के आधार पर कोपेन ने इन कटिबंधों को उप- विभागों

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

में विभाजित किया -

उष्ण कटिबंधीय जलवायु (A)

Af - वर्ष भर वर्षा → विषुवतरेखीय जलवायु
Am - मानसूनी प्रकार → मानसूनी जलवायु
As - ग्रीष्मकाल शुष्क → नहीं पायी जाती
Aw - शीतकाल शुष्क → सवाना जलवायु

शुष्क जलवायु (B) - कोपेन ने इसको शुष्कता व तापमान के आधार पर आगे विभाजित किया

S - अर्द्ध उष्ण   h - गर्म / उच्च अक्षांश
W - उष्ण जलवायु   K - ठण्डी / निम्न अक्षांश

B
- BWh - उष्ण कटिबंधीय मरुस्थल
- BWk - निम्न अक्षांशीय मरुस्थल
- BSh
- BSk

उपोष्ण जलवायु (C)

Cf - वर्ष भर वर्षा, ब्रिटिश तुल्य जलवायु
Cs - भूमध्य सागरीय जलवायु, ग्रीष्मकाल शुष्क
Cw :

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

शीतोष्ण जलवायु (D)

- Df
- Ds
- Dw

शीत ध्रुवीय जलवायु (E)

Et - टुण्ड्रा
Ef - हिमटोपी

कोपेन ने बाद में उच्च भूमि प्रकार की जलवायु को अपने वर्गीकरण में शामिल करके 'H' प्रकार भी बनाया।

कोपेन का वर्गीकरण व्यवहारिक व मानचित्र पर दर्शाने योग्य है परन्तु उसने जलवायु का केवल अपरी विश्लेषण किया तथा जलवायु के सूक्ष्म तत्वों का विश्लेषण न कर पाने के कारण यह वर्गीकरण शैक्षणिक अध्ययन के लिए उपयोगी नहीं माना जाता है। इस वर्गीकरण में जलवायु के पर्यावरण संबन्धी प्रभावों की भी उपेक्षा की गई है परन्तु यह वर्गीकरण सरल व मार्गदर्शन हेतु उपयोगी है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(c) विश्व के प्रमुख लौह उत्पादक क्षेत्रों को बताते हुए आर्थिक-औद्योगिक विकास में लोहे के महत्त्व को बताइये। 15

Highlight the major iron-producing regions of the world and explain the significance of iron in economic and industrial development. 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

लौह अयस्क को आधारभूत अयस्क माना जाता है जिस पर औद्योगिक क्रान्ति की नींव टिकी हुई है। इसके बिना देशों की प्रगति असंभव सी प्रतीत होती है।

विश्व के प्रमुख लौह उत्पादक क्षेत्र निम्नलिखित हैं–

(1) ब्राजील- मिनास-गेरेस पर्वतीय क्षेत्र प्रमुख है यह लौह अयस्क का सबसे बड़ा उत्पादक व भण्डार क्षेत्र है।

(2) रूस- चुंबक पर्वत क्षेत्र, यूराल पर्वतीय क्षेत्र

(3) USA- महान झील क्षेत्र, अप्लेशियन क्षेत्र

(4) चीन- उ.पू. चीन क्षेत्र, द. चीन क्षेत्र

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

भारत- छोटा नागपुर पठार, गोवा, बाबाबूदन की पहाड़िया इत्यादि

अन्य देश'

→ ब्रिटेन
→ फ्रांस
→ जर्मनी

लौहे के महत्व-

(क) औद्योगिक महत्व

→ आधारभूत मशीनरी का निर्माण लौहे व इस्पात द्वारा किया जाता है जो आगे वस्तुओं का उत्पादन करती है।

→ परिवहन के साधनों के निर्माण में लौहे का प्रयोग

→ रक्षा उद्योग में लौहे के माध्यम से मिसाइल, हथियार, टैंकों इत्यादि का निर्माण

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

इस प्रकार यादव ही ऐसा औद्योगिक क्षेत्र हो जहां लौहे का उपयोग न किया जाता हो इसीलिए लौहे को औद्योगिक क्षेत्र की रीढ़ कहा जाता हो

इसी के साथ कृषि क्षेत्र में उपकरणों के निर्माण. जहाजरानी क्षेत्र में लौहे के प्रयोग, निर्माण (Construction) उद्योग में लौहे का प्रयोग, आधारभूत ढांचे में लौहे के प्रकार इत्यादि के साथ अनेक क्षेत्रों में लौहे के प्रयोग के कारण इसका महत्व ज्ञात किया जा सकता हो परन्तु लौहे के भण्डारों की सीमितता को देखते हुए इसका संरक्षण भी आवश्यक हो

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

4. (a) ऊर्जा संकट को परिभाषित करते हुए इसके कारणों एवं समाधान हेतु कुछ उपायों की चर्चा कीजिये। 20

While explaining the energy crisis, discuss the reasons responsible for it and suggest some measures to address it. 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

विश्व में ऊर्जा की आपूर्ति एवं मांग में असंतुलन व्याप्त है। अतः ऊर्जा की कीमत में वृद्धि या आपूर्ति में ओर कमी के कारण देशों को ऊर्जा संकट का सामना करना पड़ता है।

ऊर्जा संकट के मुख्य कारण निम्नलिखित हैं:-

(i) मांग एवं आपूर्ति में असंतुलन।
(ii) बढ़ती जनसंख्या के कारण ऊर्जा की मांग में निरंतर वृद्धि हो रही है।
(iii) औद्योगिक क्रांति के कारण ऊर्जा उपभोग में बढ़ोतरी के कारण ऊर्जा के साधनों का अत्यधिक दोहन किया जा रहा है जिसके कारण ऊर्जा संकट का सामना

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

करना पड़ता है।

(iv) तेल उत्पादक देशों द्वारा 'OPEC (ओपेक)' जैसे संगठनों की स्थापना कर तेल की कीमतों में वृद्धि की जाती है जिससे कई देशों को ऊर्जा का संकट भोगना पड़ता है।

(v) ऊर्जा के परंपरागत स्रोतों का अत्यत दोहन हो रहा है तथा नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों की ओर धीमी गति से प्रगति के कारण भी ऊर्जा संकट का सामना करना पड़ रहा है।

इसलिए विश्व के विकास के लिए ऊर्जा संकट का समाधान अति आवश्यक है क्योंकि ऊर्जा के बिना मानव जीवन की कल्पना असंभव सी लगती है अतः

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

ऊर्जा संकट के समाधान के लिए निम्न कदम उठाए जा सकते हैं—

(i) अल्पकालिक उपाय-

→ ऊर्जा के उपभोग में गिरावट लाना।
→ ऊर्जा संरक्षण को बढ़ावा देना,
→ नवीन ऊर्जा स्रोतों की खोज करना।
→ ऊर्जा दक्षता पर बल देना।

(ii) दीर्घकालिक उपाय-

→ नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों की खोज व विकास हेतु ठोस नीति का निर्माण कर उसका क्रियान्वयन करना।
→ कम ऊर्जा उपभोग वाली मशीनों व उपकरणों के उत्पादन को बढ़ावा देना।

अंत में कहा जा सकता है कि ऊर्जा की बचत एवं नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों के विकास से ही ऊर्जा संकट का समाधान किया जा सकता है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

(b) वर्तमान में खाद्यान्न की मांग और कृषि उत्पादन में व्युत्क्रमानुपाती संबंध दिखाई दे रहा है। कथन के आलोक में कृषि उत्पादन में वृद्धि करने के तरीकों का परीक्षण कीजिये। 15

These days, a contradiction is evident between the demand of foodgrains and the agricultural production. In light of the above statement, examine the ways to increase agricultural production. 15

जनसंख्या में निरंतर वृद्धि के कारण खाद्यान्न की मांग में निरन्तर वृद्धि हो रही है परन्तु भूमि की उत्पादकता में निरंतर कमी के कारण खाद्यान्न संकट देखने को मिल रहा है।

~~~~

कृषि उत्पादन में कमी के कारण.

→ उत्पादकता में कमी

→ जोतों का विभाजन जिसके कारण कृषि अव्यवहार्य हो रही है।

→ मानसून पर निर्भरता (भारत में) के कारण फसलों का नष्ट होना

→ सभी किसानों तक सिंचाई के साधनों व पानी की उपयुक्त पहुँच का अभाव।

Copyright – Drishti The Vision Foundation
~~~~

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

→ अनेक प्रकार की बीमारियों का प्रकोप

→ जलवायु परिवर्तन के फलस्वरूप सूखे एवं बाढ़ के कारण फसल का नष्ट होना इत्यादि।

इसलिए खाद्यान्न संकट की समाप्ति एवं प्रत्येक व्यक्ति को खाद्य सुरक्षा प्रदान करते के लिए कृषि उत्पादन को बढ़ाने के लिए निम्नलिखित तरीके अपनाए जा सकते हैं—

(i) कृषि उत्पादकता में वृद्धि करना.

रासायनिक उर्वरकों का प्रयोग कम करके जैविक खेती या जीरो बजट नेचुरल फार्मिंग जैसे उपायों को अपनाना।

परन्तु इसके लिए स्पष्ट सरकारी नीति एवं निवेश की आवश्यकता है

(ii) कृषि जोतों की चकबंदी को बढ़ावा देना

समस्या → अत्यधिक न्यायिक मामलें
↘ लोगों में इच्छाशक्ति का अभाव

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(iii) जलवायु परिवर्तन को सहन करने वाली फसलों को बढ़ावा देना जैसे शुष्क क्षेत्रों में मोटे अनाजों की खेती को बढ़ावा देना तथा लवणीय क्षेत्र में पोक्कली धान जैसी फसलों को बढ़ावा देना।

(iv) अनुबंध कृषि एवं कृषि के सहकारीकरण को बढ़ावा देना।

(v) किसानों को मानसून विफल होने की स्थिति में सुरक्षा प्रदान करने हेतु सिंचाई के साधन प्रदान करना
जैसे- pm फसल बीमा योजना

इसी के साथ कृषि में अनुसंधान एवं नवाचार को बढ़ाकर तथा प्रति इकाई उत्पादकता बढ़ाकर कृषि उत्पादन को बढ़ाकर खाद्य संकट का समाधान किया जा सकता है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(c) किसी स्थान पर औद्योगिक विकास को प्रभावित करने में भौगोलिक कारकों की भूमिका की विस्तार से चर्चा कीजिये। 15

Discuss the role of geographical factors in influencing the industrial development of a place. 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

औद्योगिक विकास को अनेक भौगोलिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक, आर्थिक एवं ऐतिहासिक कारक प्रभावित करते हैं तथा अनेक उद्योगों की अवस्थिति का निर्धारण करते हैं।

औद्योगिक विकास में प्रभावी भौगोलिक कारक निम्नलिखित हैं -

(i) **जलवायु** - इसमें वर्षा की मात्रा, आर्द्रता एवं तापमान इत्यादि तत्व शामिल किए जाते हैं जो उद्योगों की अवस्थिति को प्रभावित करते हैं। जैसे सूती वस्त्र उद्योग के लिए उष्ण एवं आर्द्र जलवायु उचित रहती है तादि उसमें रेशों में नमी के कारण वे कम टूटते हैं।

(ii) **भूगर्भीय दशाएं** - भूगर्भ से अनेक खनिजों की प्राप्ति होती है, जो अनेक खनिज आधारित

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

उद्योगों की स्थापना के लिए उत्तरदायी होते हैं जैसे भारत के छोटानागपुर क्षेत्र में अनेक खनिजों की बहुलता के कारण यहाँ औद्योगिक संकुलों का विकास हुआ है।

(iii) <u>उच्चावच</u>. उद्योगों की अवास्थिति में इसकी भी महत्वपूर्ण भूमिका होती है क्योंकि समतल भूमि पर उद्योग स्थापित करना आसान रहता है तथा यहाँ परिवहन के जाल के विकास के कारण परिवहन की लागत में भी कमी आती है जो उद्योग अवस्थिति के लिए उचित कारक है। भारत के मैदानी भागों में अनेक उद्योगों का विकास इस बात की पुष्टि करता है।

(iv) <u>जल की उपलब्धता</u>. अनेक उद्योगों की

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

अपने कार्य में जल की अत्यधिक मांग की आवश्यकता होती है अतः वे जल की सुलभता को ध्यान में रखकर स्थापित किए जाते हैं, जैसे पश्चिम बंगाल में हुगली नदी से जल की प्रचुर उपलब्धता के कारण वहाँ जूट उद्योगों का विकास हुआ है।

इसी के साथ-साथ हवाओं की प्रकृति, विवर्तनिकी घटनाएं, पर्यावरणीय दशाएं भी उद्योगों की अवस्थिति को निर्धारित करती हैं।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

खण्ड - ख/ SECTION - B

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

5. निम्नलिखित में से प्रत्येक का लगभग 150 शब्दों में उत्तर दीजिये: 10 × 5 = 50

Answer the following in about 150 words each:

(a) नगरों के कार्यिक वर्गीकरण की 'आनुभविक व सांख्यिकीय विधि' को समझाइये।

Explain the 'empirical and statistical method' of functional classification of cities.

नगरों में होने वाले विभिन्न कार्यों (functions) के आधार पर उनका वर्गीकरण करना नगरों का कार्यिक वर्गीकरण कहलाता है।

आनुभविक वर्गीकरण - प्रत्यक्ष अवलोकन व प्रेक्षणों के आधार पर वर्गीकरण करना, इसके अंतर्गत आता है।

सांख्यिकीय विधि - इसके सांख्यिकीय उपकरणों का प्रयोग कर कार्यों के आधार पर नगरों का वर्गीकरण किया जाता है जैसे नेल्सन की विधि।

परन्तु जब किसी वर्गीकरण में इन दोनों विधियों का प्रयोग किया जाता

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

है तो उसे आनुभविक एवं सांख्यिकी विधि कहा जाता है।

अनेक भूगोलवेत्ताओं ने सांख्यिकी विश्लेषणों को प्रत्यक्ष अवलोकनों के साथ सम्मिलित कर नगरों का वर्गीकरण किया।

जैसे 75% से ज्यादा औद्योगिक श्रमिकों वाले ~~देशों~~ नगरों को औद्योगिक नगरों की श्रेणी में रखना।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(b) खाद्य सुरक्षा से आशय बताएँ। खाद्य सुरक्षा हेतु विभिन्न खाद्य स्रोतों की खोज और उनके विकास की आवश्यकता को स्पष्ट कीजिये।

What is meant by food security. Explain the need of looking for different food sources and their development for food security.

सभी व्यक्तियों को उचित मूल्य पर आवश्यकतानुसार खाद्यान्नों की प्राप्ति को खाद्य सुरक्षा कहा जाता है।

बढ़ती हुई जनसंख्या तथा उपलब्ध खाद्य स्रोतों की सीमितता को देखते हुए खाद्य स्रोतों के अन्य रूपों के खोज व उनका विकास अत्यन्त आवश्यक है।

→ समुद्री जोधान - धरातल पर संसाधनों की सीमितता को देखते हुए यह खाद्य सुरक्षा में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है।

↳ मत्स्यन का विकास

↳ समुद्री कृषि को बढ़ावा देना

↳ जल कृषि को बढ़ावा देना

कृपया इस स्थान कुछ न लिखें।

(Please don't wr anything in this

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

↳ धान के खेतों में मछली पालन करना

→ अधिक पोषक तत्वों से युक्त फसलों का विकास करना

→ फूड फोर्टिफिकेशन को बढ़ावा देना

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(c) जलीय चक्र में विभिन्न प्रक्रमों के योगदान का वर्णन कीजिये।

Describe the contribution of various processes in the aquatic cycle.

जल का विभिन्न अवस्थाओं से गुजरते हुए वापस अपने प्रारंभिक स्वरूप को प्राप्त करना जल चक्रण कहलाता है।

जलीय चक्र के विभिन्न प्रक्रम -

(i) वाष्पीकरण
- वर्षा में उपयोगी
- कृषि उत्पादन में महत्व

(ii) संघनन
- वर्षा में उपयोगी
- बादल निर्माण
- सूर्य की किरणों का परावर्तन

(iii) वर्षण
- कृषि हेतु उपयोगी
- पेयजल
- उद्योग में प्रयोग

(iv) प्रवाह
- पानी का स्थानांतरण
- पानी का वितरण समान
- जल परिवहन

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(v) अंतः स्यंदन (Infiltration)
— भूजल रिचार्ज

(vi) Transpiration (वाष्पोत्सर्जन)
— वर्षण हेतु उपयोगी
— वनस्पति हेतु उपयोगी

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(d) किसी समाज में प्रजननता को निर्धारित करने वाले कारकों की चर्चा कीजिये।

Discuss the factors affecting fertility in a society.

कृपया इस स्थ
कुछ न लिखें।
(Please don't
anything in t

प्रजनन

प्रजननता - अपनी आयु के दौरान महिला द्वारा पैदा किए गए जीवित बच्चों की संख्या।

प्रजननता को प्रभावित करने वाले कारक

(i) भौगोलिक कारक - जलवायु, आर्द्रता, मृदा

उपजाऊ मृदा → खाद्यान्न ↑ → प्रजननता ↑

(ii) सामाजिक कारक

पितृसत्तात्मक सोच → पुत्र की इच्छा

(iii) आर्थिक कारण

→ मार्क्स गरीबी को प्रजननता के अधिक होने का कारण मानते हैं।

(iv) स्वास्थ्य दशाएं

→ जीवन प्रत्याशा कम → बच्चे ज्यादा पैदा करेंगे।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

(v) कम शिक्षा या प्रजनन शिक्षा के अभाव के कारण

(vi) बल विवाह इत्यादि ।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(e) प्रादेशिक नियोजन में बॉटम-अप एप्रोच से सतत् विकास के लक्ष्य को पाया जा सकता है। कथन को व्याख्यायित कीजिये।

The goal of sustainable development can be achieved through the bottom-up approach in regional planning. Explain.

जमीनी स्तर का विकास करके ऊपरी स्तर का विकास करना बॉटम अप अप्रोच कहलाता है

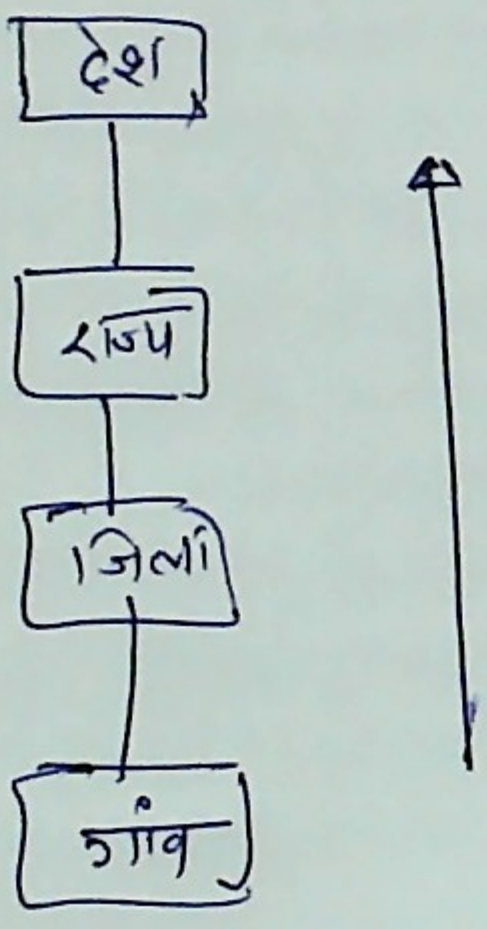

बॉटम अप अप्रोच को सतत विकास लक्ष्यों (SDGs) को प्राप्त करने में भूमिका.

→ ग्रामीण विकास → कृषि विकास → भुखमरी

कृपया इस स्था
कुछ न लिखें।
(Please don't v
anything in th

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

में कमी → SDG 1 की प्राप्ति

→ किसानों के विकास के कारण गरीबी में भी कमी होगी → SDG 2

→ गाँवों के विकास के फलस्वरूप शहरों की ओर प्रवास में कमी आएगी तथा शहरों का संपोषणीय विकास होगा (SDG)

→ लोकतांत्रिक विकेन्द्रीकरण के कारण संस्थाओं का विकास होगा (SDG)

→ ग्रामीण विकास → रोजगार के अवसरों में वृद्धि → आजीविका में वृद्धि (SDG) → (अच्छे रोजगार की प्राप्ति)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

8. (a) प्रवासन को समझाते हुए इसके लिये उत्तरदायी कारकों की विस्तार से चर्चा कीजिये। साथ ही, यह भी बताएँ कि यह कैसे किसी स्थान के सामाजिक-आर्थिक विन्यास को प्रभावित करता है? 20

Explain migration and discuss the factors responsible for it. How does migration affect the socio-economic profile of a region? 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this spa

व्यक्ति या व्यक्तियों के समूहों का स्थायी या अस्थायी रूप से एक स्थान से दूसरे स्थान पर गमन करना प्रवास कहलाता है।

प्रवास के अनेक सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक, ऐतिहासिक एवं भौगोलिक कारक होते हैं, जिनमें से कुछ प्रमुख निम्नलिखित हैं:-

i) भौगोलिक कारक- इसमें जल की उपलब्धता, आर्द्रता, तापमान, खनिज उपलब्धता, उच्चावच शामिल हैं। मनुष्य के दौरान अनेक समुदाय इन कारकों से प्रभावित होते हैं। इसी के साथ लोग कम उपजाऊ मृदा से अधिक उपजाऊ मृदा के क्षेत्रों में गमन करते हैं।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ii) आर्थिक कारक- आजीविका एवं रोजगार की उपलब्धता, गरीबी इत्यादि भी प्रवास को प्रभावित करते है। इसमें लोग गाँवों से शहरों की ओर गमन करते हैं।

(iii) सांस्कृतिक कारण- शिक्षा, वैवाहिक संबन्धों, तीर्थयात्रा इत्यादि के कारण लोग प्रवास करते है।

(iv) राजनैतिक कारक- युद्धग्रस्त क्षेत्रों से लोग प्रवास करते है जैसे रोहिंग्या समुदाय का प्रवास।

(v) ऐतिहासिक कारक- यहुदियों का प्रवास, गिरमिटिया श्रमिकों का प्रवास इत्यादि।

इसी प्रकार प्रवास के लिए उत्तरदायी कारकों को अपकर्षक एवं आकर्षक कारकों में भी बाँटा जाता है।

प्रवास के अनेक आर्थिक, सामाजिक

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

एवं राजनैतिक प्रभाव उत्पन्न होते हैं जिनमें से कुछ प्रमुख कारक निम्नलिखित हैं–

सामाजिक प्रभाव

→ जनांकिकीय संगठन में बदलाव
- लिंगानुपात में बदलाव
- आयु-वर्गों के संघटन (composition) में बदलाव
- कार्यशील जनसंख्या में बदलाव इत्यादि

→ संस्कृतियों का मिश्रण

→ आर्थिक प्रभाव
- संसाधनों का सदुपयोग अल्प जनसंख्या वाले क्षेत्रों में प्रवास के कारण
- शहरों में संसाधनों पर दबाव जैसे प्रदूषण, भीड़भाड़, भूमि कीमतों में बढ़ोतरी जैसे प्रभाव।

इसी के साथ प्रवास के कारण अनेक बार धार्मिक तनाव एवं सामाजिक-सांस्कृतिक (भाषायी तनाव) भी देखने को मिलते हैं।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ भी न लिखें।

Please do not write anything except the question number in this space)

(b) तापीय प्रतिलोमन से क्या तात्पर्य है? इसके प्रमुख प्रकारों की चर्चा करते हुए स्थानीय जलवायु पर पड़ने वाले इसके प्रभावों की चर्चा कीजिये। 15

What is the meaning of temperature inversion? Discuss its different types and its impact on local climatic conditions. 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

सामान्यतः पृथ्वी की सतह से ऊपर की ओर जाने पर तापमान में कमी देखने को मिलती है परन्तु जब इस प्रवृत्ति में व्युत्क्रमण अर्थात् ऊपर जाने पर तापमान में वृद्धि देखने को मिलती है तब उस दशा को तापीय प्रतिलोमन कहा जाता है।

तापीय प्रतिलोमन के प्रकार-

(i) सामान्य प्रतिलोमन (विकिरण प्रतिलोमन) - जब पृथ्वी की सतह से अत्यधिक पार्थिव विकिरण का उत्सर्जन होने के कारण पृथ्वी के पास वाली सतह ऊपर वाले परत से ठण्डी हो जाए तो ऐसी स्थिति देखने को मिलती है इसके कारण कुहरा (~~संघनन~~ संघनन के कारण) देखने को मिलता है

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ii) अभिवहन ~~कुछ~~ प्रतिलोमन

जब एक स्थान पर ठण्डी वायु का आगमन हो जाए (ऑब्जि दिशा) में तो ऐसी स्थिति देखने को मिलती हो

ज्यादा ताप गर्म हवा

कम ताप ठण्डी हवा ← ठण्डी वायु का आगमन

पृथ्वी सतह

(iii) घाटी समीर एवं पर्वतीय समीर के कारण भी तापीय प्रतिलोमन देखने को मिलता है।

स्थानीय जलवायु पर तापीय प्रतिलोमन का प्रभाव

→ जल की बूंदों के सतह के पास संघनन के कारण कुहरे का निर्माण हो

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this spa

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

सकता है जिसके कारण दृश्यता में कमी आती है।

→ वायु के तापमान में कमी के कारण वायु का ऊपर की ओर संवहन नहीं हो पाता जिससे वर्षा नहीं होती तथा वायुमण्डलीय स्थिरता की दशा देखने को मिलती है।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright - Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(c) मरूस्थलीय या अर्द्धशुष्क पारितंत्र का परिचय देते हुए इसके समक्ष मौजूद खतरे और इसके संरक्षण के उपायों का वर्णन कीजिये। 15

Give a brief account of desert or semi-arid ecosystems. Describe the impending hazards and suggest measures for their protection. 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

विश्व में अनेक प्रकार के पारितंत्र देखने को मिलते हैं जिसमें मरुस्थलीय पारितंत्र अपनी विशेषताओं के कारण महत्वपूर्ण स्थान रखता है।

मरुस्थलीय पारितंत्र की विशेषताएँ

→ यहां वर्षा या आर्द्रता की मात्रा कम एवं तापमान की अधिकता (शुष्क मरुस्थल) पाई जाती है।

→ पानी की कमी के कारण वनस्पतियों की पत्तियां काँटों में परिवर्तित हो जाती हैं तथा उनकी जड़े काफी गहराई तक जाती है।

→ ~~वनाव~~ वनस्पति घनत्व एवं जनसंख्या घनत्व काफी कम पाया जाता है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

→ यहां के जीव-जन्तु पानी की अत्यंत कम मात्रा पर जीवित रह सकते हैं तथा अनेक जानवर तो अनेक दिन तक बिना पानी पिये रह सकते हैं जैसे. ऊंट

मरुस्थलीय पारितंत्र के समक्ष खतरें

→ जलवायु परिवर्तन के कारण वर्षा की ओर कमी व तापमान में वृद्धि के कारण वनस्पतियों एवं जीव-जंतुओं का विलोपन

→ वनाच्छादित आवरण में कमी के कारण मरुस्थल के विस्तार की संभावना

→ अवैध शिकार एवं पर्यटन के कारण जैव. विविधता को खतरा → पारिस्थितिकी असंतुलन

↳ उदाहरण. राजस्थान में गोड़ावन का संकटग्रस्त होना

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

संरक्षण के उपाय -

→ अवैध शिकार पर प्रतिबंध लगाकर सख्त निगरानी करना

→ जीवों के संरक्षण हेतु स्थानीय समुदायों की मदद से प्रयास करना

→ मृदा अपरदन में कमी लाना इत्यादि

भारत सरकार इसके लिए मरुभूमि विकास योजना, मरुस्थलीय (डेजर्ट) सर्किट (स्वदेश दर्शन योजना) इत्यादि कदम उठा रही है ताकि इसका संरक्षण किया जा सके।

Feedback

Questions ....

Model Answer & Answer Structure ....

Evaluation ....

Staff ....

Copyright – Drishti The Vision Foundation